Year : 8
Issue : 32 (iv)
April-June 2019
www.pramanaresearchjournal.com

ISSN : 2249-2976

Impact Factor : 4.005

(Art, Humanity, Social Science, Commerce, Management, Law & Science Subjects)
(Indexed & Listed at : Ulrich's Periodicals Directory , ProQuest. U.S.A.)
(Indexed & Listed at : Copernicus, Poland)
(Indexed & Listed at : Research Bib, Japan)
(Indexed & Listed at : Indian Journal Index (IJINDEX))
(UGC Approved List No. 41241)

(International Refereed)

Pramāna

Research Journal

Editor-in-Chief

Acharya (Dr.) Shilak Ram

यावत् जीवेत् सुखं जीवेत्

Acharya Academy
Bharat
ISO 9001:2008

Scanned with CamScanner

Pramāna
International Refereed
(Peer Reviewed)

UGC List No.41241
Impact Factor : 4.005
Research Journal (ISSN : 2249-2976)
Year-8, Issue-32(iv)(Apr.-Jun. 2019) (Page No. 169-174)

वैदिक वाङ्मय में स्त्री विमर्श : एक अध्ययन

डॉ. मूल चन्द
सह आचार्य - संस्कृत
राजकीय लोहिया पी.जी.
महाविद्यालय, चूरू (राज.)

शोध-आलेख सार

वेद आर्यों का प्राचीनतम साहित्य है। वेद विश्व साहित्य की प्राचीनतम रचना है। भारतीयों का गौरवपूर्ण इतिहास वेद से ही पूर्ण रूप से अवगत होता है। वेद शब्द के पाणिनि के अनुसार चार अर्थ हैं। विद् धातु-ज्ञानार्थ है, विद् सत्तायाम्-सतार्थ है, विदलृलाभे-लाभ अर्थ है, विद् विचारणे- अर्थ विचार है। इन चारों धातुओं से घञ् प्रत्यय करने से वेद शब्द सिद्ध होता है। वेद को श्रुति भी कहा जाता है। वैदिक वाड.मय में स्त्री का प्राचीनतम रूप ऋग्वेद में मिलता है। यहां नारी की श्रेष्ठ स्थिति का परिचय भी मिलता है। वैदिक समाज में कन्याओं के उपनयन संस्कार भी हुआ करते थे। वेद के अनेक सूक्तों का साक्षात्कार नारियों ने किया है। वैदिक समाज में नारी अपनी उपार्जित व उपयोगी विद्या से सन्तान, परिवार तथा समाज को पूर्ण लाभ प्रदान करती थी। स्त्री को पारिवारिक संगठन में पूर्ण स्वतंत्रता थी। वैदिक समाज में नारियों की शिक्षा पर विशेष बल दिया गया है। नारी को कन्या, पुत्री, भगिनी, स्त्री, माता इत्यादि अनेकों नामों से पुकारा जाता था।

मुख्य-शब्द : ऋग्वेद, यजुर्वेद, अथर्ववेद, सामवेद, मनुस्मृति ऐतरेयब्राह्मण, अभिज्ञानशाकुन्तलम्, स्त्री, नारी, गुरूजन, पुत्र, प्रतिव्रता ।

विषय विस्तार

वेद विश्व साहित्य की प्राचीनतम रचना है। प्राचीन भारतीय इतिहास सभ्यता एवं संस्कृति का विस्तृत ज्ञान वेदों के द्वारा ही प्राप्त होता है। वेद का जो स्थान भारतीय साहित्य में है वह किसी अन्य ग्रन्थ का नही है, क्योंकि उनका गौरवपूर्ण इतिहास यही से पूर्ण रूपेण अवगत होता है।

पाणिनी ने वेद शब्द में चार धातुओं का प्रयोग किया है। विद् ज्ञाने = विद्धातु ज्ञानार्थ है, विद् सत्तायाम् = विद् धातु सतार्थ है, विद्लृलाभे = विद् धातु लाभ अर्थ है, विद् विचारणे विद् धातु अर्थ विचार है। इन चार धातुओं से धञ् प्रत्यय करने से वेद शब्द सिद्ध होता है। श्रु श्रवणे = श्रवण अर्थ में है इससे क्तिन् प्रत्यय होने से श्रुति शब्द सिद्ध होता है।

''विदन्ति जानन्ति विद्यन्ते भवन्ति, विन्दन्ति विन्दन्ते लभन्ते, विन्दते विचारयन्ति सर्वे मनुष्याः सर्वाः सत्यविद्याः यैयेषु वा तथा विद्वांसश्च भवन्ति ते वेदाः तथाऽऽदि सृष्टिमारभ्याद्यपर्यन्तं ब्रह्मादिभिः सर्वाः सत्यविद्याः श्रूयन्तेऽनया सा श्रुतिः।[1]

वेदों में ऋग्वेद की रचना सर्वप्रथम हुई। वैदिककालीन नारी का प्राचीनतम रूप ऋग्वेद में ही मिलता है। ऋग्वेद में नारी की श्रेष्ठ स्थिति का परिचय मिलता है। इस काल की कन्याओं का बालकों की तरह उपनयन

Scanned with CamScanner

संस्कार होता था। वैदिक समाज में बाल विवाह प्रायः कम हुआ करते थे इसलिए यौवनावस्था में पदार्पण करने से पूर्व ही उन्हें शिक्षा प्राप्ति का पूर्ण अवसर प्राप्त होता था। ऋग्वेद के अनेक सूक्त नारियों द्वारा ही आविष्कृत हैं।

ऋग्वेद के अनेक सूक्तों का साक्षात्कार नारियों ने किया है यथा- घोषा ने दशम् मण्डल के 39वें एवं 40वें सूक्तों का, इन्द्रदेव की पत्नी इन्द्राणी ने भी दशम मण्डल के सूक्तों का साक्षात्कार किया। इनके अतिरिक्त अपाला, रोमशा, सूर्य पुत्री सूर्या, राची, लोपामुद्रा इत्यादि।

वैदिक समाज में नारी अपनी उपार्जित व उपयोगी विद्या से सन्तान, परिवार तथा समाज को पूर्ण लाभ प्रदान किया करती थी। इसलिए नारी का अत्यधिक सम्मान था। उसे पारिवारिक संगठन में पूर्ण स्वतंत्रता थी।

स्त्री विमर्श से तात्पर्य वेद में जहां-जहां स्त्री का विवेचन, परीक्षण, विचार, ज्ञान, तर्क, गुणदोष का विवेचन इत्यादि के प्रसंग जहां उपलब्ध होंगे उनका संक्षेप में विवेचन किया जाएगा।

नारी शिक्षा के सन्दर्भ में वेद कहता है -

नूनं सा ते प्रति वरं जरित्रे
दुहीयन्दिन्द्र दक्षिणा मघोनी
शिक्षा स्तोतृभ्यो माति धग्भगो
नो वृहद्वदेम विदथे सुवीराः।।[2]

अर्थात् हे देने वाले राजन! आपके राज्य में जो प्राण देने वाली बहुत धन से युक्त विदूषी स्तुति करने वालो श्रेष्ठ काम पूर्ण करे वह निश्चय से कल्याण करने वाली हो। हे विदूषी! तू कन्याओं को शिक्षा दे हम लोगों के लिए स्तुति करने वाले विद्वानों से मत किसी काम का विनाश कर जिससे सुन्दर विद्या में व्याप्त होने वाले वीरों से युक्त हम लोग विद्यादान रूपी यज्ञ में बहुत ऐश्वर्य को कहे। अर्थात् जो धार्मात्मा विदूषी पण्डितानी स्त्रियां हों उनसे सब कन्याओं को सुन्दर शिक्षा दिलाओं।

वैदिक युग में वास्तव में विदूषी नारियां थी -

सुयवसाद्भगवती हि भूया अथो वयं
भगवन्तः स्याम। अद्धि तृणमघ्न्ये विश्वदानीं
पिब शुद्धमुद कमा चरन्ती।।[3]

अर्थात् जब तक माता जन वेदवित् न हो तब तक उनके सन्तान भी विद्यावान नही होते। जो विदूषी हो, स्वयंवर विवाह कर सन्तानों को उत्पन्न कर और उनको अच्छी शिक्षा देकर उन्हें विद्वान् करती है वे गौओं के समान समस्त जगत को आनन्दित करती है।

वेद कहता है ये नारियां विधवा न हो, सौभाग्यवती रहे।

इमा नारीरविधवाः।।[4]

स्त्री समयानुसार अपनी पहचान बदलती रहती है जब वह बाल्यावस्था में रहती है तो पुत्री, वही स्त्री एक भाई के सामने बहन, विवाह के पश्चात् वही स्त्री अपने पति की पत्नी बनती है। जब उसी स्त्री के सन्तान हो जाती है तो वह माता कहलाती है। जब हम उपासना करते है तो उसी स्त्री को देवता के रूप में देखते है इस प्रकार स्त्री के अनेकों नाम स्थान विशेष व समयानुसार बदलते रहते हैं।

स्त्री पुत्री के रूप में -

वैदिक साहित्य स्त्रियों को मातृ तथा पत्नी रूप को ही प्रकृष्ट रूप में चित्रित किया गया है -

मम पुत्राः शत्रूहणोऽथो में दुहिता विराट्।[5]

वेद में स्त्री को कन्या के यज्ञ एवं वर्चस्व को स्वीकार करते हुए कहा -

'ब्रह्मचर्येण कन्या युवानं विन्दते पतिम्'[6]

Scanned with CamScanner

अर्थात् कन्या ब्रह्मचर्य के प्रभाव से स्पृहणीय युवा पति को प्राप्त करती है।

ऐतरेय ब्राह्मण में पुत्री को कृपण कहा गया है –

'सखा ह जाया, कृपणं ह दुहिता'[7]

भगिनी रूप में –

वेद के सूक्तों में स्त्री को भगिनी के रूप में चित्रित किया गया है वहां देवता व पुरुषों के बीच भगिनी स्वरूप का चित्रण किया गया है।[8]

याज्ञवल्क्य स्मृति में भी भगिनी हेतु कहा –

'भगिन्यश्च निजादंशाद्दत्वांश तु तुरीयकम्'[9]

अर्थात् यदि बहनों का विवाह आदि संस्कार नहीं हुआ है तो सभी भाई अपने अंश (हिस्से) से चौथाई भाग देकर उनका विवाह संस्कार करायें।

स्त्री पत्नी के रूप में –

वेद में पत्नी हेतु कहा कि पाणी-ग्रहण के बाद स्त्री धर्मपत्नी हो जाती है–

'गृह्णामि ते सौभगत्वाय हस्तम्'[10]

अर्थात् वे वरानने! मै दाम्पत्य सुख और उत्तम सन्तान रूप सौभाग्य के लिए तेरा पाणिग्रहण करता हूं, तेरा हाथ पकड़ता हूं।

'पत्नी त्वमसि धर्मणा'[11]

अर्थात् हे विवाहिता नारी। आज से तू मेरी धर्मपत्नी है।

'ममेयमस्तु पोष्या'[12]

यह विवाहित पत्नी मेरी पोष्या अर्थात् पालन पोषण करने योग्य है। पति पत्नी के विवाह पश्चात् दोनों आनन्दमय जीवन व्यतीत शुरू करते हैं। दानों एक-दूसरे के बिना अधुरे से महसूस करने लग जाते हैं। इस हेतु कहा है कि पुत्रवति! मुझ पति के साथ तू दिव्य जीवन व्यतीत कर।

'मया पत्या प्रजावति सं जीव!'[13]

स्त्री का विवाह होने के पश्चात् वह ससुराल में प्रत्येक कार्य से अनभिज्ञ रहती है। कोनसी वस्तु कहां उपलब्ध होगी इन तमाम कार्यो से अनभिज्ञ होने के कारण विवाहिता स्त्री को गृहस्थ कार्यो में लगाने हेतु आह्वान किया गया है।

'इमां नारीं सुकृते दधात।'[14]

अर्थात् इस नारी को पुण्यमय उत्तम गृहस्थ कर्मो में लगाओं।

'सा नो अस्तु सुमंगली'।[15]

वह विवाहिता नारी हमारे लिए मंगलकारी हो।

'शिवा स्योना पतिलोके विराज'।[16]

अर्थात् हे नारी तु मंगलकारिणी और सुखदायिनी बनकर पतिगृह में विराज हो।

स्त्री के विवाह पश्चात् सभी सोचते है कि यह महिला घर के लिए शुभ तथा मंगलकारी हो, इस हेतु कहा है –

'शिवा नारीयमस्तमागन्'।[17]

अर्थात् नारी कल्याणकारिणी होकर घर में आए।

कालीदास ने भी अभिज्ञानशांकुतलम् में चतुर्थ अंक में जब शकुन्तला ससुराल जा रही है उस समय नायिका को सामाजिक धर्म सम्बन्धी महर्षि काश्यप उपदेश देते है और कहते है –

शुश्रुषस्व गुरून् कुरू प्रियसखीवृतिं सपत्नीजने

Scanned with CamScanner

भर्तुर्विप्रकताऽपि रोषणतया मा स्म प्रतीपं गमः।।
भूयिष्ठं भव दक्षिणा परिजने भाग्येष्वनुत्सेकिनी
यान्त्येवं गृहणीपदं युवतयो वामाः कुलस्याधमः।।[18]

अर्थात् गुरूजनों की सेवा करना सपत्नी जनों पर प्रिय सखी जैसा व्यवहार करना तिरस्कृत होने पर भी क्रोध के कारण पति के प्रतिकूल कार्य मत करना। अपने आश्रितजनों पर अत्यधिक उदार रहना, अपने सौभाग्य के विषय में निराभिमानी रहना। इस प्रकार आचरण करने वाली स्त्रियां सगृहिणी पद को प्राप्त होती है। इसके विपरीत आचरण करने वाली दोनों ही कूलों के लिए मानसिक व्यथा होती है।

इसी तरह वेद में भी कहा -

संपत्नी प्रति भूषेह देवान्।[19]

अर्थात् श्रेष्ठपत्नी बनकर तू घर में आये देवों, विद्वानों, अतिथियों का सत्कार किया कर।

सुनारी - वेद में सुनारी हेतु कहा गया है -

विश्वस्य हि प्राणनं जीवनं
त्वे वि यदुच्छसि सूनरि।
सा नो रथेन बृहता विभावरि
श्रुधि चित्रामघे हवम्।।[20]

अर्थात् जिस प्रकार उषा से सभी प्राणिजगत को सुख होता है वैसे ही पतिव्रता स्त्री से प्रसन्न पुरुष को सभी आनन्द होते है।

पत्नी के गुण - वेद में पत्नी के गुणों के विषय में कहा -

इडे रन्ते हव्ये काम्ये चन्द्रे ज्योतेऽदिते
सरस्वती महि विश्रूति। एता तेऽअघ्न्ये
नामानि देवभ्यो मां सुकृतं ब्रूतात्।।[21]

अर्थात् जो विद्वानों से शिक्षा पाई हुई स्त्री हो वह अपने पति और अन्य सब स्त्रियों को यथा योग्य उत्तम कर्म सिखाये, जिससे किसी तरह वे अधर्म की ओर न जाएं वे दोनों स्त्री पुरुष विद्या की वृद्धि और बालकों तथा कन्याओं को शिक्षा दिया करें।

स्त्री माता के रूप में -

वैदिक साहित्य में महिला पूजनीय थी। अथर्ववेद में कहा कि माता भूमि पुत्रोऽहं पृथिव्या।[22]

ऐतरेय ब्राह्मण माता के सन्दर्भ कहा कि -

देवाश्चैतामृषयश्च, तेजः समभरन् महत्।
देवा मनुष्यानब्रुवन्नेषा वो जननी पुनः।।[23]

अर्थात् इस (स्त्री) में देवों और ऋषियों ने अपना महान् रेत रूप सार पुत्रोत्पादन के लिए ही सम्पादित किया है और फिर मनुष्यों से कहा- हे मनुष्यों। जो यह जाया रूप से है वही पुनः पुत्र को जन्म देने से आप लोगों की जननी (माता) होती है।

वेद में मन्त्र दर्शन से उनकी विद्वता प्रकट होती है। वैदिक युग में यथावसर स्त्रियां सभाओं में भाषण आदि भी दिया करती थी। इनके अलावा कृषि कार्य भी पुरुषों के सहयोग हेतु करती थी।

मनुष्यवृति में माता के सन्दर्भ में मनु ने कहा 'माता गौरव के कारण पिता से हजार गुना श्रेष्ठ है- सहस्रं तु पितृन माता गौरवेणा तिरिच्यते।[24]

स्त्री के सैकड़ों नामों का उल्लेख है। सभी का उल्लेख यहां कर पाना असम्भव है अतः संक्षेप में इनके अन्य नाम इस प्रकार है- कन्या, जाया, गार्हपत्य, युवति, प्रिया, रूपिणी, भावुका, बालिका, देवी, महिला, लक्ष्मी,

Scanned with CamScanner

महारानी, रानी, भगिनी, मातृष्वसा (मौसी), मातुलानी (मामी), श्वश्रूः (पत्नी की मां), पितृष्वसा (भूआ), भार्या, तन्वी, कोमलाङ्गि, सुन्दरी इत्यादि सैकड़ो नाम उपलब्ध है।

नारी महिमा -

आदित्यै रास्नासीन्द्राण्या उष्णीषः
पूषासि धर्माय दीष्व।।[25]

अर्थात् हे स्त्रि/ जैसे पगड़ी आदि वस्त्र सुख देने वाले होते है, वैसे तू पति के लिए सुख देने वाली हो।

स्त्री गौरव -

मुद्धांसि राड् ध्रुवासि धरूणा धर्त्र्यसि धरणी।
आयुषे त्वा वर्चसे त्वा कृष्यै त्वा क्षेमाय त्वा।।[26]

अर्थात् हे स्त्रि! जो तू सूर्य के तुल्य उत्तम हो, प्रकाशमान निश्चल के समान निश्चल शुद्ध है, पुष्टि करने वाला आधार रूप पृथिवी के तुल्य धारण करने वाली है, उस तुझे जीवन के लिए, उस तुझे अन्न के लिए, उस तुझे खेती होने के लिए और उस तुझको रक्षा होने के लिए सब ओर से ग्रहण करता हूं। आप इस प्रकार सबकी आधारभूत माता के तुल्य मान्य पृथिवी है, वैसे ही विदूषी स्त्री को होना चाहिए।

वैदिक साहित्य में स्त्री की महिमा तथा गौरव रहा है परन्तु ऋग्वेद 10.85.45 में कहा कि दस या बीस पुत्रों को उत्पन्न करने वाली स्त्री प्रशंसा योग्य है।

अथर्ववेद 2.36.3 में कहा कि अनेक पुत्रों को जन्म देने वाली माता महिषी कही जाती थी।

निष्कर्ष -

वैदिक साहित्य में स्त्री का महत्वपूर्ण स्थान दृष्टिगोचर होता है। वैदिक समाज में स्त्री को अनेकों नामों से सम्बोधित किया जाता था यथा- नारी, भगिनी, पत्नी, माता, ऋषिका, दुहितृ, योधा, वधू, अम्बा, इडा, काम्या, चन्द्रा, योधा, वामा, अबला, प्रमदा, ललना, यामिनी, महिला, दुहिता, वेद में स्त्री को ब्रह्मा कहा गया है।[27]

वैदिक काल में प्रारम्भ से ही स्त्री का समाज में बहुत आदरथा। वैदिक संस्कृति में स्त्री को मातृरूप में मानकर उसका सम्मान किया जाता था -

"यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवता"।

संदर्भ----------

1 ऋग्वेद भाष्यभूमिका, पृ. 20
2 ऋग्वेद, 2.17.9
3 ऋग्वेद, 1.164.40
4 अथर्ववेद, 12.2.31
5 ऋग्वेद, 10.159.3
6 अथर्ववेद, 11.5.18
7 ऐतरेय ब्राह्मण, 33.1, पृ. 1143
8 ऋग्वेद, 1.123.5
9 याज्ञवल्क्य स्मृति दायविभाग पद्य नं. 124
10 अथर्व वेद, 14.1.50
11 अथर्ववेद, 14.1.51
12 अथर्ववेद, 14.1.52
13 अथर्ववेद, 14.1.52

Scanned with CamScanner